

२. गीत राजा उदैसिंघ राठौड़ जोधपुर रौ

कड़ा नीकड़ा लोहड़ा ऊजळा कोरड़ा, बाथ फेरै घड़ाबंध वारै ।
रीठ पड़तां विचै ऊदड़ा रूकड़ा, माल रा वंकड़ा तूहीज मारै ॥१॥

लायकां तरणै मूंह घायकां लोपीया, विड़गह विचै सहत बिहत वाज ।
पाड़ तायक धरा खरै नायक पणै, सिंघ सांची अचड़ ऊठियां साज ॥२॥

हैवै दळ छात दळ सैन लग हाथळे, अलव खळां लोप असमान आधार ।
तूंक चडिया धकै हाथ पड़िया तकां, माल रा सींघली ऊठियां मार ॥३॥

किरमरां मार लग चंद ऊदौ कहै, सकज मेलै नहीं धरा सांभी ।
हार जीती करे पिसण मसळै हिया, मार ऊभां गयौ मेर मांभी ॥४॥

—माला सांदू रौ कहाँ

- २ गीतसार—ऊपरान्त गीत जोधपुर नरेश उदैसिंह की युद्धवीरता पर कथित है । गीत में वर्णन किया गया है कि हे राव मालदेव तनय उदैसिंह ! घमासान युद्ध में अपरिमित शस्त्र-प्रहारों के मध्य प्रवेश कर शत्रु-सेना का तुम ही नाश करते हो । पराजयों को विजय में परिणत करने में तुम समर्थ हो ।

१. कड़ा—कवच । नीकड़ा—बिना कवच । लोहड़ा—शस्त्र । ऊजळा—उज्ज्वल । बाथ—भुजपाश । घड़ाबंध—पेनाधीश, राजा । रीठ—शस्त्रों की चोटें । ऊदड़ा—राजा उदैसिंह । रूकड़ा—तलवार । मालरा—राव मालदेव का पुत्र । वंकड़ा—विकट, बाँकुरा ।
२. तरणै—के । मूंह—मुख । घायकां—मारने वाले । लोपीया—उल्लंघन किया । विड़गह—घोड़ा । बिहत—दोनों हाथों से । वाज—प्रहार कर । पाड़—गिरा कर । तायक—शत्रु, संहार करने वाला । धरा—मृथ्वी । खरै—खरा, सच्चा । पणै—पन । सिंघ—राजा उदैसिंह । अचड़—श्रेष्ठ कार्य, कीर्ति । साज—सज्जित होकर ।
३. हैवै दळ—बादशाही सेना का । छात—छत्र, रक्षक । लग—तक । हाथळे—हथेल, पंजा । अलव—अलम्य । खळां—वैरियों के । लोप—उल्लंघन कर । असमान—आकाश । चडिया धकै—सामने आये । तकां—जिनके । सींघली—सिंह, भूखा शेर ।
४. किरमरां—तलवारों की । ऊदौ—उदैसिंह ।

३. गीत राजा उदैसिंघ राठौड़ जोधपुर रौ

सिर भमै तकंतौ सास उसासां, सिंघ तराँ असमर सींचाण ।
 जाळे मिळै जंगळे जीवण, सिर ढांकै चिड़लो सुरताण ॥१॥
 रोहे ऊदैसींघ धारारव, विहंग विछूटौ वडा विनांण ।
 डांणां चूक भाड़ां दिस दौड़ै, चौड़ै नह दौड़ै चहुवाण ॥२॥
 पातल जैत पंख पाड़ावीया, सिंघ खड़ग हरि वाहण सीक ।
 जीव ऊबारण नवण जंगली, माथा नवण करै मछरीक ॥३॥
 आगै सहर भटाणां ऊपर, ओछीयौ प्राण चालियौ ऊठि ।
 बाहै वाजराज बीजूजळ, पारेवडा देवडा पूठि ॥४॥
 तीखा खाग खगेसुर ताकै, साल काढ़वा माल सुजाव ।
 परहरि सहर वावरै पांखां, रेसै डहर कबूतर राव ॥५॥
 —माला सांदू रौ कहाँ

३. गीतसार—उपयुक्त गीत राजा उदयसिंह राठौड़ जोधपुर पर कथित है । गीत में उदय-सिंह द्वारा सिरोही के देवड़ों पर विजय प्राप्त करने का वर्णन है । गीतकार ने गीत-नायक को पक्षीराज बाज और उसकी तलवार को पंख तथा विपक्षी योद्धा देवड़ाओं को चिड़िया वर्णित किया है और कहा है कि वे तरु भंगरों की ओट में मृत्यु भय से छिपते फिरते हैं, फिर भी बच नहीं पाते हैं ।

१. भमै—चक्कर काटता है । तकंतौ—ताक लगाये हुए । उसासां—उर्ध्वश्वास । सिंघ तराँ—राजा उदयसिंह की । असमर—तलवार । सींचाण—बाज पक्षी । जाळे—वृक्षों का सघन समूह । जंगळे—वन । ढांकै—छिपाते हैं । चिड़लो—चिड़ा, पक्षी । सुरताण—महाराव सुरतान देवडा सिरोही नरेश ।
२. रोहे—घेरे में लेता है । धारारव—तलवार । विहंग—पक्षी । विनांण—रहस्य, विज्ञान । डांणां चूक—अवसर खोया हुआ, होश हवास भूला हुआ । भाड़ां—भाड़ियों । दिस—तरफ । चौड़ै—खुले मैदान में ।
३. पातल—प्रतापसिंह । जैत—जैत्रसिंह । पाड़ावीया—उखड़वा लिये । खड़ग—तलवार । हरि वाहण—पक्षीराज गरुड़ । जीव ऊबारण—बचाने हेतु । नवण—भुक्ते । मछरीक—चीहान, सुरतान ।
४. भटाणां—स्थान का नाम । ओछीयौ—कम, क्षुद्र । बाहै—प्रहार करता है । बीजूजळ—तलवार । पारेवडा—कपोत । पूठि—पीठ पर, भागते हुए पर ।
५. तीखा—तीक्ष्ण । खगेसुर—पक्षीराज । काढ़वा—निकालने । माल सुजाव—राव मालदेव का पुत्र राजा उदयसिंह । परिहरि—त्यागकर । रेसै—संहार करता है, दमन करता है । डहर—खुला साफ मैदान । कबूतर राव—कपोत रूपी राव पक्षी ।